हिंदी अनुवादक: पादरी विजय पाल सिंह
पाठ 10
सितम्बर 5,
2026 के लिए
प्रामाणिक
मसीही सेवकाई

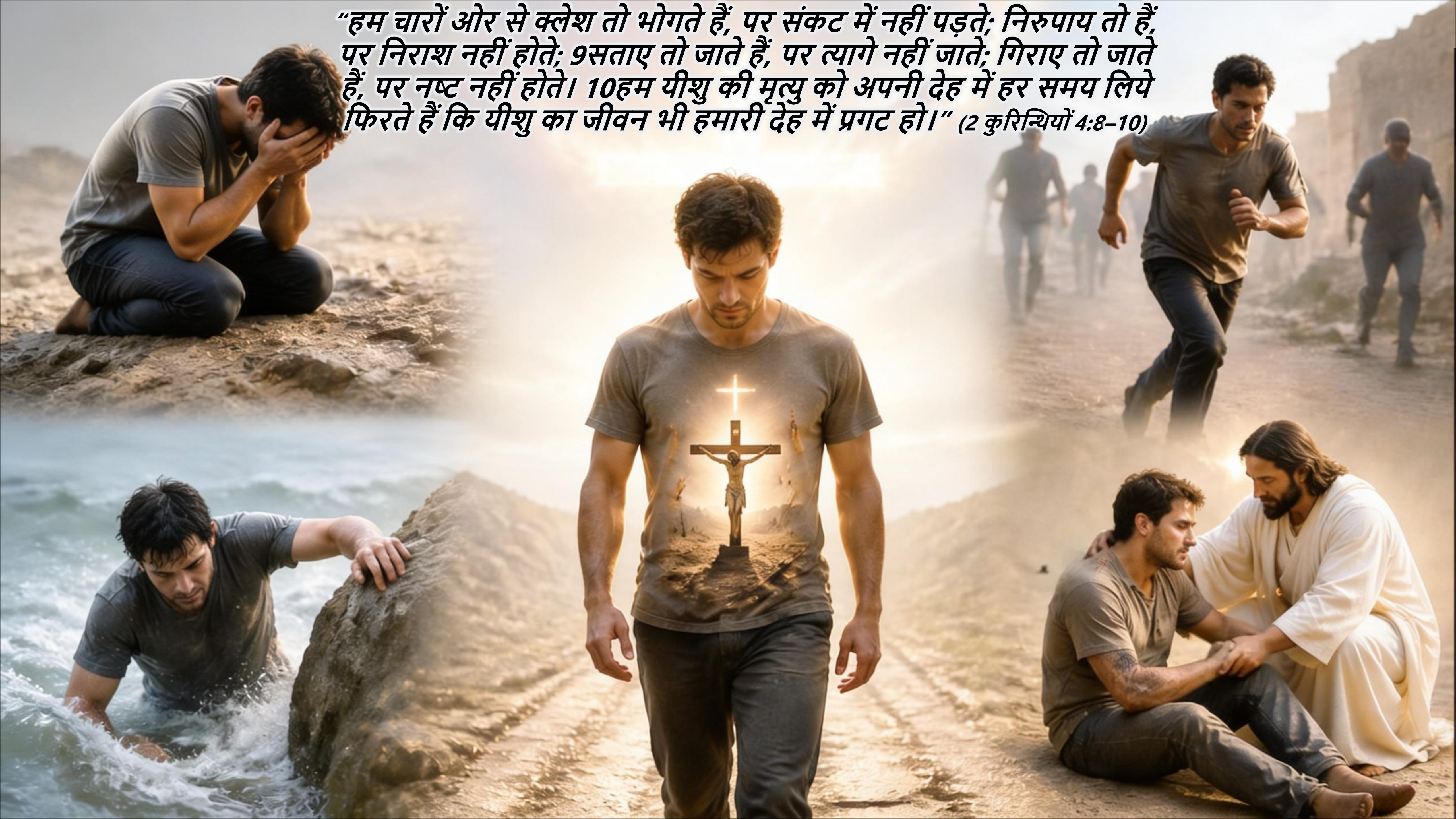
“हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो हैं,
पर निराश नहीं होते; 9सताए तो जाते हैं, पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते
हैं, पर नष्ट नहीं होते। 10हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिये
फिरते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो।” (2 कुरिन्थियों 4:8–10)

किसने कहा कि एक पादरी का जीवन आरामदायक होता है? सुसमाचार के सेवकों पर एक महान उत्तरदायित्व होता है, और उनकी सेवकाई जोखिमों से रहित नहीं होती।

नाश होने वाले लोगों के प्रति प्रेम, और उन लोगों की देखभाल करने की कोमल भावना जिन्होंने पहले ही सुसमाचार को स्वीकार कर लिया है, ताकि वे विश्वास में स्थिर रहें और आत्मिक रूप से बढ़ते जाएँ—यही बात सच्चे सेवकों को भयंकर भेड़ियों से अलग करती है।

जब कलीसिया अपने सेवकों के साथ सहयोग करती है और अपने जीवन-व्यवहार में दृढ़तापूर्वक परिवर्तन लाती है, तब वह मेल-मिलाप का एक साधन बन जाती है, जो सबके लिए सांत्वना और आनन्द का स्रोत बनती है।

- पादरी का कार्य
  - योग्य सेवक
  - सेवकाई के जोखिम
- सदस्यों के कर्तव्य
  - मेल-मिलाप के राजदूत
  - पवित्रता का आह्वान
- संयुक्त प्रयास का परिणाम
  - सांत्वना और आनन्द

पादरी का कार्य

योग्य सेवक

"हमारी पत्री तुम ही हो, जो हमारे हृदयों पर लिखी हुई है और उसे सब मनुष्य पहिचानते और पढ़ते हैं।" (2 कुरिन्थियों 3:2)

कुछ बातें समय के साथ बहुत अधिक नहीं बदलतीं। जैसे पहली शताब्दी में सिफारिश-पत्र अवसरों के द्वार खोलते थे, वैसे ही आज भी वे अनेक स्थानों पर महत्त्व रखते हैं। क्या कुरिन्थुस की कलीसिया द्वारा स्वीकार किए जाने के लिए पौलुस को किसी सिफारिश-पत्र की आवश्यकता थी? (2 कुरिन्थियों 3:1)

उसके पास सबसे उत्तम सिफारिश-पत्र था—स्वयं कुरिन्थुस के विश्वासी (2 कुरिन्थियों 3:2)। प्रेरित और उसके सहयोगियों के प्रचार के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह ने उनके हृदयों को परिवर्तित कर दिया था (2 कुरिन्थियों 3:3)।

पौलुस और उसके सहयोगी "नई वाचा के योग्य सेवक" थे (2 कुरिन्थियों 3:6)। यह एक महिमामयी वाचा है, जिसे पवित्र आत्मा अनन्त जीवन के लिए मनुष्य के हृदय पर लिखता है।

किन्तु कुछ लोग दूसरी वाचा का अनुसरण करते थे—अर्थात् पत्थर की पटियाओं पर लिखी व्यवस्था के कामों के द्वारा उद्धार पाने की धारणा का। यही बात उन्हें अनुग्रह की महिमा को देखने से रोकती थी (2 कुरिन्थियों 3:7–9)।

सेवकाई के जोखिम

“क्योंकि सब वस्तुएँ तुम्हारे लिये हैं, ताकि अनुग्रह बहुतों के द्वारा अधिक होकर परमेश्वर की महिमा के लिये धन्यवाद भी बढ़ाए।” (2 कुरिन्थियों 4:15)

पौलुस सेवकाई के जोखिमों को समझता था और उन्हें सहन करता था। परन्तु वह जानता था कि ये जोखिम सार्थक हैं, और जिन लोगों को वह उद्धार प्राप्त करने का अवसर दे रहा था, उनके प्रति प्रेम के कारण उसने इन्हें सहर्ष सहा (2 कुरिन्थियों 4:15)। इसके अतिरिक्त, उसे परमेश्वर की सहायता का पूरा भरोसा था (2 कुरिन्थियों 4:7–9):

हम...	परन्तु...
क्लेश तो भोगते हैं	संकट में नहीं पड़ते
निरुपाय तो हैं	निराश नहीं होते
सताए तो जाते हैं	त्यागे नहीं जाते
गिराए तो जाते हैं	नष्ट नहीं होते

सुसमाचार दुर्बल मानवों के द्वारा प्रचारित किया जाता है, ताकि सारी महिमा केवल परमेश्वर को मिले।

पुनरुत्थान के दिन हमें जो “अत्यन्त महान और अनन्त महिमा” प्राप्त होगी, उसकी तुलना में हमारे वर्तमान दुःख केवल “पल भर का हल्का सा क्लेश” हैं (2 कुरिन्थियों 4:14–18)।

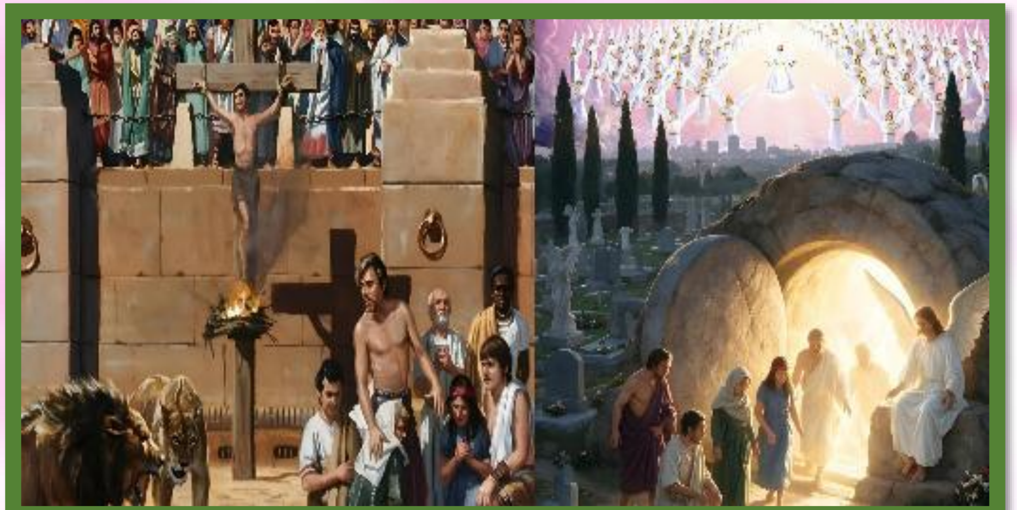

सदस्यों के कर्तव्य

मेल-मिलाप के राजदूत

“ये सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेलमिलाप कर लिया, और मेलमिलाप की सेवा हमें सौंप दी है।” (2 कुरिन्थियों 5:18)

वह प्रेरक शक्ति जो कलीसिया के जीवन (और प्रत्येक सदस्य के जीवन) का संचालन करनी चाहिए, यह है: “क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है” (2 कुरिन्थियों 5:14)। यह प्रेम किस बात में प्रकट होता है, और यह हमें किस बात के लिए विवश करता है?

मसीह ने प्रेम के कारण अपना जीवन दे दिया। यह हमें उसके लिए जीवन जीने के लिए विवश करता है (2 कुरिन्थियों 5:14–15)।

मसीह ने हमें नई सृष्टि बना दिया है। यह हमें अपना पुराना जीवन छोड़ देने के लिए विवश करता है (2 कुरिन्थियों 5:17)।

मसीह ने हमारा परमेश्वर के साथ मेल करा दिया है। यह हमें मेल-मिलाप के राजदूत बनने के लिए विवश करता है (2 कुरिन्थियों 5:18–20)।

इस प्रकार, मसीह का प्रेम हमें जीवन में एक आमूल-चूल परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करता है। मसीह के प्रेम में जीवन बिताना हमें उस प्रेम को दूसरों के साथ बाँटने के लिए भी प्रेरित करता है, और उन्हें आशा के इस सन्देश को स्वीकार करने का आग्रह करता है: “परमेश्वर के साथ मेल कर लो” (2 कुरिन्थियों 5:20)।

पवित्रता का आह्वान

"अत: हे प्रियो, जब कि ये प्रतिज्ञाएँ हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें।"
(2 कुरिन्थियों 7:1)

पवित्रता का आह्वान सेवकों और सदस्यों दोनों के दैनिक जीवन को प्रभावित करता है:

- कठिनाइयों को सहना (2 कुरिन्थियों 6:4–5)
- आत्मा का फल उत्पन्न करना (2 कुरिन्थियों 6:6)
- सत्य और धर्म के अनुसार चलना (2 कुरिन्थियों 6:7)
- हर परिस्थिति में दृढ़ बने रहना (2 कुरिन्थियों 6:8–10)
- दूसरों के लिए अपने हृदय को खोल देना (2 कुरिन्थियों 6:11–13)
- अविश्वासियों के हानिकारक प्रभाव से अपने आपको अलग रखना (2 कुरिन्थियों 6:14–15)

पुराने नियम के विभिन्न अंशों को एक साथ प्रस्तुत करते हुए, पौलुस पवित्रता के आह्वान और उसके परिणामों का सार बताता है (2 कुरिन्थियों 6:16–18):

आह्वान

- पाप के स्थानों से निकल आओ।
- पापियों से अलग हो जाओ।
- अशुद्ध वस्तु को मत छुओ।

परिणाम

- मैं तुम्हारे बीच निवास करूँगा।
- मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा।
- तुम मेरी प्रजा होगे।
- मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा।
- मैं तुम्हारा पिता होऊँगा।

संयुक्त प्रयास का परिणाम

सांत्वना और आनन्द

"मैं तुम से बहुत हियाव के साथ बोल रहा हूँ, मुझे तुम पर बड़ा घमण्ड है; मैं शान्ति से भर गया हूँ। अपने सारे क्लेश में मैं आनन्द से अति भरपूर रहता हूँ।" (2 कुरिन्थियों 7:4)

जिन समस्याओं का पौलुस सामना कर रहा था, उनके बावजूद वह अत्यन्त आनन्दित था (2 कुरिन्थियों 7:4)। उसके इस आनन्द का कारण क्या था?

पौलुस ने कुरिन्थियों को एक कठोर पत्र लिखा था, जिससे वे दुःखी हो गए थे (2 कुरिन्थियों 7:8)। परन्तु वह दुःख उन्हें मन फिराव की ओर ले गया (2 कुरिन्थियों 7:9–10)। इसके परिणामस्वरूप पौलुस के साथ और एक-दूसरे के साथ उनके सम्बन्धों में पूर्ण परिवर्तन आ गया (2 कुरिन्थियों 7:11–12)।

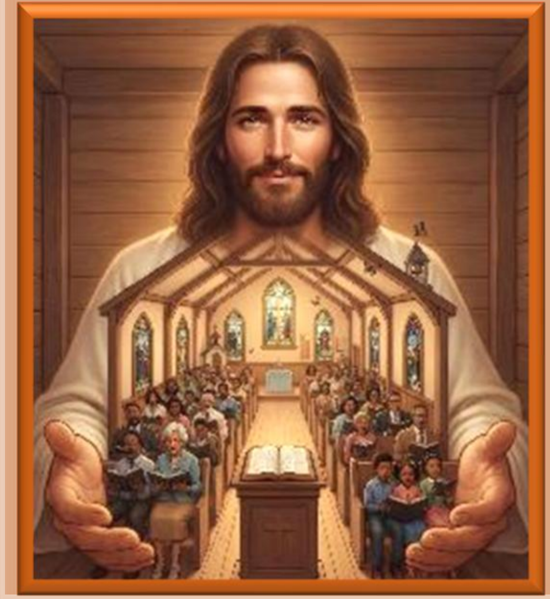

इस प्रकार, सबको सांत्वना मिली। पौलुस का साथी तीतुस सांत्वना से भर गया (2 कुरिन्थियों 7:7)। तीतुस के आने से पौलुस को भी सांत्वना मिली (2 कुरिन्थियों 7:6)। कुरिन्थियों को भी सांत्वना मिली, और इससे पौलुस को भी और अधिक सांत्वना प्राप्त हुई (2 कुरिन्थियों 7:13)।

किन्तु पौलुस ने इसका श्रेय स्वयं को नहीं दिया। यदि पादरी और कलीसिया के सदस्य आनन्द और सांत्वना का अनुभव कर सकते हैं, तो इसका कारण यह है कि परमेश्वर ही "दीनों को शान्ति और सांत्वना देता है" (2 कुरिन्थियों 7:6)।

“सेवकाई का अर्थ है सेवा, और इस सेवा के लिए हम सभी बुलाए गए हैं। जो कोई अपने सुख के लिए जीवन बिताना चुनता है, वह परमेश्वर का अनादर करता है। मेरे भाइयो और बहनो, क्या आप यह समझते हैं कि प्रत्येक वर्ष हजारों-हजार लोग अपने पापों में नाश हो रहे हैं, क्योंकि सत्य का प्रकाश उनके जीवन-पथ पर नहीं चमकाया गया है?

हमारे संसार में एक महान कार्य किया जाना बाकी है। स्त्री और पुरुष अन्यभाषाएँ बोलने के वरदान या चमत्कारों के द्वारा नहीं, बल्कि क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह के प्रचार के द्वारा परिवर्तित किए जाने हैं। संसार को बेहतर बनाने के इस प्रयास में विलम्ब क्यों किया जाए?”

ई जी व्हाइट (मसीह को प्रतिबिंबित करना, 30 अगस्त)